B.A.I Honours
DR. M. A. JOHN
SOCIOLOGY

SOCIAL STRUCTURE

आधुनिक समाजशास्त्र में जिन अवधारणाओं की मूल रूप से तथा सबसे अधिक महत्वपूर्ण रूप से चर्चा की जाती हैं, उनमें Structure तथा function की अवधारणाओं का विशेष स्थान है। द्वितीय विश्व युद्ध के समय इस अवधारणा का विकास हुआ और इस अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग Herbert Spencer ने अपनी पुस्तक 'Principles of Sociology' में किया। Durkheim ने भी इसे परिभाषित करने का प्रयास किया। आधुनिक युग में Radcliffe Brown, George Murdock, Levi Strauss इत्यादि विद्वानों ने भी इसे बहुत अधिक popularise करने का प्रयास किया। और दूसरे जिन विद्वानों ने इनके बाद इस अवधारणा की चर्चा की वह वास्तव में उन्हीं विद्वानों का modified version था।

Herbert Spencer ने समाज की तुलना एक जीव रचना से की और यह विचार दिया की जिस प्रकार मानव शरीर में छोटे छोटे बहुत सारे भाग होते हैं और यह सभी भाग आपस में जब मिल जुल कर कार्य करते हैं तो एक शारीरिक रचना का निर्माण होता है उसी प्रकार मानव समाज में भी बहुत सारे छोटे बड़े भाग होते हैं जो आपस में एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं और मिल जुल कर एक दूसरे के साथ कार्य करते हैं तो सामाजिक संरचना का निर्माण होता है और विभिन्न छोटे छोटे भाग की एक व्यवस्था है। इस प्रकार उन्होंने समाज के personification करने का प्रयास किया है।

विभिन्न समाजशास्त्री अपने अपने ढंग से एक समय से समाजिक संरचना को परिभाषित करने का प्रयास करते रहे हैं। परन्तु अभी तक इसकी कोई एक निश्चित परिभाषा नहीं पायी जाती है। इन परिभाषाओं की चर्चा इस प्रकार की जा सकती है।

Parsons के अनुसार "समाजिक संरचना परस्पर सम्बन्धित संस्थाओं, एजेन्सीयों और समाजिक प्रतिमानों तथा साथ ही समूह में प्रत्येक सदस्य द्वारा ग्रहण किये गये पदों तथा कार्यों की विशिष्ट क्रमबद्धता को कहते हैं।" इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक संरचना का निर्माण सामाजिक संस्थाओं, Agencies, प्रतिमानों एवं भूमिकाओं तथा पदों से होता है। साथ यह इकाईयां एक दूसरे से सम्बन्धित होती हैं तथा इनमें क्रमबद्धता पायी जाती है।

Karl Mannheim के अनुसार "समाजिक संरचना परस्पर क्रिया करती हुई सामाजिक शक्तियों का जाल है जिससे अवलोकन और चिन्तन की विभिन्न प्रणालियों का जन्म होता है।" अर्थात उनके अनुसार समाजिक संरचना, सामाजिक शक्तियों का जाल है। उनका तात्पर्य व्यवस्थित प्रतिमानों से है।

Morris Ginsberg के अनुसार "समाजिक संरचना का अध्ययन सामाजिक संगठन के प्रमुख स्वरूपों, अर्थात समूहों, समितियों तथा संस्थाओं के प्रकार एवं इन सबके संकुल जिनसे की समाज का निर्माण होता है से सम्बन्धित है।" इस प्रकार उसने सामाजिक संरचना और सामाजिक संगठन में कोई भेद नहीं स्पष्ट किया है।

Scanned by CamScanner

Nadel के अनुसार "मूर्त जनसंख्या एवं उसके व्यवहार, एक दूसरे से सम्बन्धित भूमिकाएं अदा करने के रूप में कर्त्ताओं के बीच प्राप्त सम्बन्धों के जाल या प्रतिमान से अमूर्तीकरण द्वारा हम समाज की संरचना पर पहुँच जाते हैं। इस प्रकार Nadel ने सामाजिक संरचना को अंगों की व्यवस्थित क्रमबद्धता बताया है।

और भी दूसरे बहुत सारे समाजशास्त्रियों ने अपने अपने ढंग से इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है जैसे R. Brown, H.M. Johnson, MacIver and Page, Majumdar & Madan तथा Coser इत्यादि।

इन परिभाषाओं के विश्लेषण तथा व्याख्या के आधार पर इसकी निम्नलिखित विशेषताओं की चर्चा इस प्रकार की जा सकती है

CHARACTERISTICS (विशेषताऐं):

(1) समाज का बाहरी रूप! सामाजिक संरचना का सम्बन्ध सामाजिक इकाइयों की कार्यविधि से नहीं है बल्कि इन इकाइयों ~~का~~ क्रमबद्ध रूप से जुड़ने से एक ढाँचे का निर्माण होता है, उसी ढाँचे को सामाजिक संरचना कहा जाता है।

(2) सामाजिक संरचना एक क्रमबद्धता है, कोई व्यवस्था नहीं! सामाजिक संरचना का इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं है कि समाज का निर्माण करने वाली इकाइयों को कैसे संगठित किया जा सकता है सामाजिक संरचना उन इकाइयों के केवल बाहरी स्वरूप का बोध कराती है जिनसे एक समाज का निर्माण होता है।

Scanned by CamScanner

(3) एक स्थिर प्रतिमान : Johnson के अनुसार सामाजिक संरचना का निर्माण जिन समूहों और उपसमूहों से होता है व अपेक्षाकृत रूप से अधिक स्थायी प्रकृति के होते हैं।

(4) अमूर्त प्रकृति : Parsons के अनुसार इसका निर्माण विभिन्न इकाइयों, संस्थाओं एवं प्रतिमानों द्वारा होता है जो एक अमूर्त धारणा है। Wright तथा Mac-Iver ने भी इसे एक अमूर्त धारणा के रूप में स्वीकार किया है।

(5) सामाजिक संरचना का निर्माण अनेक उप संस्थाओं द्वारा होता है जैसे परिवार, जाति, वर्ग, धर्म, शिक्षा संस्थान, धार्मिक, आर्थिक संस्था इत्यादि

(6) स्थानीय विशेषताओं से प्रभावित - Radcliff Brown ने सामाजिक संरचना की धारणा में स्थानीय विशेषताओं को भी उपयोगी एवं महत्वपूर्ण माना है।

(7) प्रत्येक इकाई का एक पूर्व निश्चित पद एवं स्थान : राज्य, धर्म, परिवार, विवाह, धर्म, शिक्षा संस्थान आदि सभी का स्थान पूर्व निर्धारित है।

(8) सामाजिक संरचना में सामाजिक प्रक्रियाएं भी महत्वपूर्ण होती है।

(9) सामाजिक संरचना में विघटन के तत्व भी पाये जाते हैं।

(10) सामाजिक संरचना अन्तः सम्बन्धित इकाइयों का एक व्यवस्थित स्वरूप है।

—X—

Scanned by CamScanner